ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(12): 96-100
www.allresearchjournal.com
Received: 22-10-2021
Accepted: 24-11-2021

अमरनाथ
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. छाया श्रीवास्तव
प्राचार्य, श्री रामाकृष्णा कालेज ऑफ एजुकेशन, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अमरनाथ
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

फतेहपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक का अध्ययन

अमरनाथ, डॉ. छाया श्रीवास्तव

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श हेतु चयनित 04–04 विद्यालयों, कुल 52 विद्यालयों में सत्र 2019–20 में शाला अभिलेख पत्रक के आधार पर प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के फलस्वरूप शाला त्यागी दर को दर्शाया गया है। न्यादर्श में चयनित प्रधानाध्यापक, शिक्षक, अभिभावक व छात्रों के अभिमतो द्वारा यह स्पष्ट हुआ कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का औसत उपलब्धि 53.27 है तथा मानक विचलन 13.06 है। शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में में सार्थकता का औसत उपलब्धि 54.62 है तथा मानक विचलन 13.64 है।

कूटशब्दः फतेहपुर जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, एकीकृत शिक्षा

1. प्रस्तावना
आज विश्व के सभी देशों में प्रारंभिक शिक्षा को जन जन को सुलभ बनाने के लिए सार्थक प्रयास किये जा रहे है। यही कारण है कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर जितने बालक – बालिकाएँ अध्ययन हेतु विद्यालय में सुलभ होते है, उतना अन्य किसी स्तर पर नहीं। इसलिए प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों की संख्या माध्यमिक एवं उच्च शिक्षण संस्थाओं की तुलना में बहुत अधिक हैं। आज भी बहुत से अविकसित एवं विकासशील राष्ट्रों के अधिकांश बालक–बालिकाएँ मात्र प्रारंभिक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् जीवन के मुख्य धारा से जुड जाते है।

अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का विचार प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था की देन है अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का नारा सबसे पहले 19वीं शताब्दी के मध्य में पश्चिमी देशों में दिया गया। स्वीडन में सबसे पहले सन् 1842 में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की गयी। इसके पश्चात् सन 1852 में अमेरिका में इस व्यवस्था को अपनाया गया। सन् 1860 में नार्वे में, सन् 1970 में इग्लैण्ड में तथा सन् 1905 हंगरी, पुर्तगाल, स्वीटजरलैण्ड आदि ने प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।

अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का विचार प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था की देन है अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का नारा सबसे पहले 19वीं शताब्दी के मध्य में पश्चिमी देशों में दिया गया। स्वीडन में सबसे पहले सन् 1842 में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की गयी। इसके पश्चात् सन 1852 में अमेरिका में इस व्यवस्था को अपनाया गया। सन् 1860 में नार्वे में, सन् 1970 में इग्लैण्ड में तथा सन् 1905 हंगरी, पुर्तगाल, स्वीटजरलैण्ड आदि ने प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति द्वारा 01 अप्रैल, 2018 से 31 मार्च, 2020 के लिये नई एकीकृत शिक्षा योजना बनाने के स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है। प्रस्तावित योजना में, सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए) और शिक्षक शिक्षण अभियान को समाहित कर दिया गया है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 21वीं सदी के भारत की जरूरतों को पूरा करने के लिये भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव हेतु जिस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 को मंजूरी दी है अगर उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समकक्ष ले आएगी। नई शिक्षा नीति, 2020 के तहत 3 साल से 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 के अंतर्गत रखा गया है। 34 वर्षों पश्चात् आई इस नई शिक्षा नीति का उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है जिसका लक्ष्य 2025 तक पूर्व–प्राथमिक शिक्षा (3–6 वर्ष की आयु सीमा) को सार्वभौमिक बनाना है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल फतेहपुर जिले वरन् सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के क्रियान्वयन का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र में एकीकृत योजना का विद्यार्थियों के शाला त्यागी दर पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना।
2. शोध क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करना।
3. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के फलस्वरूप शाला त्यागी दर घट रही है।
2. शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
3. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला फतेहपुर है। इसके अन्तर्गत 13 विकासखण्ड – असोधर, बहुआ, भिटौरा, हसवा, तेलियानी, अमौली, देवमई, खजुहा, मलवां, एरायां, धाता, हथगाम व विजयीपुर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित एकीकृत शिक्षा योजना के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधिः प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधिः शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित एकीकृत शिक्षा योजना के क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 साक्षात्कार विधिः शोध क्षेत्र फतेहपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित एकीकृत शिक्षा योजना के क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्रधानाध्यापक तथा अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.4 सांख्यिकी विधिः प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित फतेहपुर जिले के प्रत्येक विकासखण्ड से 4–4 प्रारंभिक विद्यालय कुल 52 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय से प्रधानाध्यापक, 2–2 शिक्षक कुल 104 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 1040 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित एकीकृत शिक्षा योजना के क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], आर्येन्दु, अखिलेश (2007)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], खुल्लर, के. के. (1988)[4], गहरवार मिथलेस सिंह (2005)[5], चतुर्वेदी, आर.सी. एवं मिश्रा, शिवानी (2007)[6], तिवारी, मोनू (2008)[7], यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006)[8], वर्मा, शशि कला (2016)[9]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

फतेहपुर जनपद निचले गंगा–यमुना दोआब में स्थित इलाहाबाद मण्डल का पश्चिमी जनपद है, जिसका विस्तार 25°26′ उत्तरी अक्षांश से लेकर 26°16′ उत्तरी अक्षांश एवं 80°14′ पूर्वी देशांतर से 81°20′ पूर्वी देशांतर के मध्य आयताकार रूप में हैं। यह उत्तर में गंगा नदी औद दक्षिण में यमुना नदी द्वारा सीमांकित है। इसकी पूरब–पश्चिम अधिकतम् लम्बाई 230 कि.मी. और उत्तर–दक्षिण चौड़ाई 95 कि.मी. है। इसके उत्तर में उन्नाव, रायबरेली व उत्तरपूर्व में प्रतापगढ़, पूर्व में इलाहाबाद, दक्षिण में यमुना नदी के पार हमीरपुर व बादा तथा पश्चिम में कानपुर जनपद स्थित है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक 01: शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के फलस्वरूप शाला त्यागी दर घट रही है।

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के फलस्वरूप शाला त्यागी दर का अध्ययन (शाला अभिलेख पत्रक के आधार पर) सत्र 2019–20

क्र.	विकासखण्ड	न्यादर्श में चयनित विद्यालयों की संख्या	कुल नामांकित छात्र संख्या ।	शाला त्यागी छात्र संख्या ठ
1.	असोधर	04	198	.
2.	बहुआ	04	254	.
3.	भिटौरा	04	285	.
4.	हसवा	04	307	.
5.	तेलियानी	04	244	.
6.	अमौली	04	301	.
7.	देवमई	04	288	.
8.	खजुहा	04	318	.
9.	मलवां	04	268	.
10.	एरायां	04	270	.
11.	धाता	04	310	.
12.	हथगाम	04	286	.
13.	विजयीपुर	04	280	.
योग		52	3609	.

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श हेतु चयनित 04–04 विद्यालयों, कुल 52 विद्यालयों में सत्र 2019–20 में शाला अभिलेख पत्रक के आधार पर प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के फलस्वरूप शाला त्यागी दर को दर्शाया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के सभी विकासखण्डों में सत्र 2019–20 में शाला त्यागी नही हुये है। अतः उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के फलस्वरूप शाला त्यागी दर शत–प्रतिशत घटी है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांक 02: शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

सारणी क्रमांक 2: शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

क्र.	विकासखण्डों के नाम	न्यादर्श में चयनित							
		प्रधानाध्यापक (प्रत्येक विकासखण्ड से 04 अर्थात कुल 52)		शिक्षक (प्रत्येक विकासखण्ड से 08 अर्थात कुल 104)		अभिभावक (प्रत्येक विकासखण्ड से 08 अर्थात कुल 104)		छात्र (प्रत्येक विकासखण्ड से 80 अर्थात कुल 1040)	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	असोधर	04	100.00	07	87.50	04	50.00	64	80.00
2.	बहुआ	04	100.00	05	62.50	06	70.00	66	82.50
3.	भिटौरा	03	75.00	07	87.50	06	70.00	58	72.50
4.	हसवा	03	75.00	06	70.00	04	50.00	64	80.00
5.	तेलियानी	04	100.00	05	62.50	05	62.50	66	82.50
6.	अमौली	03	75.00	07	87.50	05	62.50	60	75.00
7.	देवमई	03	75.00	06	70.00	06	70.00	64	80.00
8.	खजुहा	04	100.00	05	62.50	04	50.00	58	72.50
9.	मलवां	03	75.00	07	87.50	05	62.50	70	87.50
10.	एरायां	03	75.00	07	87.50	04	50.00	60	75.00
11.	धाता	04	100.00	05	62.50	06	70.00	64	80.00
12.	हथगाम	04	100.00	06	70.00	05	62.50	60	75.00
13.	विजयीपुर	04	100.00	07	87.50	04	50.00	67	83.75
योग		46	88.46	80	76.92	64	61.54	821	78.94

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 2 में शोध क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के न्यादर्श में चयनित 04–04 विद्यालयों के प्रधानाध्यापको, शिक्षकों, अभिभावकों व छात्रों से प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

शोध क्षेत्र के असोधर, बहुआ, तेलियानी, खजुहा, धाता, हथगाम व विजयीपुर के प्रधानाध्यापकों ने शत–प्रतिशत माना है कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

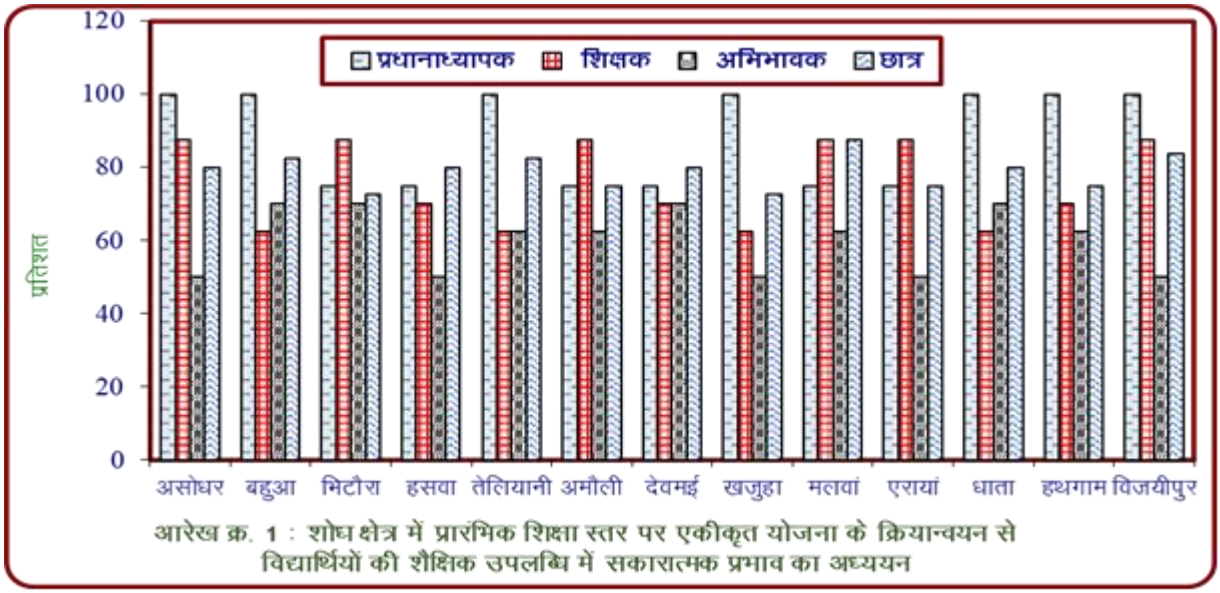

आरेख क्र. 1 : शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 88.46 प्रतिशत प्रधानाध्यापक यह मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

शोध क्षेत्र में असोधर, भिटौरा, अमौली, मलवां, एरायां व विजयीपुर विकासखण्ड में 87.50 प्रतिशत, हसवां, देवमई व हथगाम विकासखण्ड में 70.00 प्रतिशत शेष सभी विकासखण्डों में 62.50 प्रतिशत शिक्षक यह मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। शोध क्षेत्र में न्यादर्श में चयनित कुल 104 शिक्षकों में से 76.92 प्रतिशत शिक्षक यह मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

शोध क्षेत्र के बहुआ, भिटौरा, देवमई व धाता विकासखण्ड के 70.00 प्रतिशत, तेलियानी, अमौली, मलवां व हथगाम विकासखण्ड के 62.50 प्रतिशत एवं शेष सभी विकासखण्ड के 50.00 प्रतिशत अभिभावक के कथनानुसार शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। शोध क्षेत्र में न्यादर्श में चयनित कुल 104 अभिभावकों में से 61.54 प्रतिशत अभिभावक यह मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

शोध क्षेत्र के सबसे अधिक मलवां विकासखण्ड में 87.50 प्रतिषत और सबसे कम बहुआ और खजुहा विकासखण्ड में 72.50 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। शोध क्षेत्र में न्यादर्श में चयनित कुल 1040 छात्रों में से 78.94 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

अतः उपरोक्त प्रधानाध्यापक, शिक्षक, अभिभावक व छात्रों के अभिमतानुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांक 03: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी क्रमांक 3: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (N)		520	520
मध्यमान (ड)		53.27	54.62
मानक विचलन (SD)		13.06	13.64
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		–1.63	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

Df = (520-1) + (520-1) =519+519 =1038

उपरोक्त सारणी क्रमांक 3 मे न्यादर्श में चयनित ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का औसत उपलब्धि 53.27 है तथा मानक विचलन 13.06 है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक 3 में न्यादर्श में चयनित शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। उपरोक्त सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में में सार्थकता का औसत उपलब्धि 54.62 है तथा मानक विचलन 13.64 है।

1038 df पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान –1.63 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है। अतः परिकल्पना क्र. 3 सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के सभी विकासखण्डों में सत्र 2019–20 में शाला त्यागी नही हुये है। अतः उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत शिक्षा योजना के फलस्वरूप शाला त्यागी दर शत–प्रतिशत घटी है।

शोध क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के न्यादर्श में चयनित 04–04 विद्यालयों के प्रधानाघ्यापको, शिक्षकों, अभिभावकों व छात्रों से प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है। संकलन द्वारा प्राप्त जानकारी द्वारा यह स्पष्ट हुआ कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर एकीकृत योजना के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

12. संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं षिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. आर्येन्दु, अखिलेश (2007) : प्राथमिक शिक्षा और सरकारी कार्य योजना, 'कुरूक्षेत्र', मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष–53, अंक–11 पृ0–10–12.
3. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. खुल्लर, के.के. (1988) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
5. गहरवार मिथलेस सिंह (2005) : रीवा जिले में राजीव गांधी शिक्षा मिशन के शैक्षिक नवाचारो का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययनः अप्रकाशित शोध ग्रंथ शिक्षा, अ.प्र.सिं.वि.वि.रीवा.
6. चतुर्वेदी, आर.सी. एवं मिश्रा, शिवानी (2007) : वर्तमान भारतीय शिक्षा, समाज और भ्रष्टाचार, Research Journal of Social and Life Sciences, vol-2, year-01, पृ0 195–204.
7. तिवारी, मोनू (2008) : उत्तर प्रदेश की प्रारंभिक शिक्षा में लागत, लाभ विश्लेषणः (आठवीं तथा नौवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गतः अप्रकाशित शोध ग्रंथ छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.
8. यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006) : वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन भारतीय शैक्षिक परम्पराओं की प्रासंगिकता। भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी. ई.आर.टी., वर्ष–24, अंक–3 पृष्ठ–75–84.
9. वर्मा, शशि कला (2016) : उत्तर प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा की कटु सच्चाइयाँ, अक्टूबर 2015– जनवरी 2016 (संयुक्तांक) 69.70